कनिष्क प्रथम के सिक्के

Q5. Coins of Kanishka I

Ans → कुषाण वंश का सबसे शक्तिशाली एवं प्रसिद्ध राजा कनिष्क हुआ। वह वीम कडफिसस के बाद सिंहासन पर बैठा, किन्तु इन दोनों में क्या सम्बन्ध था कहना कठिन है। उनके शासन काल में कुषाण शक्ति अपनी चरम सीमा पर पहुँच गयी। सिक्कों एवं अभिलेखों के अध्ययन से मालूम होता है कि उसने कुषाण राज्य को तुर्किस्तान से लेकर वाराणसी तक विस्तृत कर किया। कनिष्क सिक्कों के अध्ययन से तत्कालीन आर्थिक, धार्मिक एवं कलात्मक दशाओं का ज्ञान होता है।

कनिष्क के सिक्के दो प्रकार (1) सोना एवं (2) ताँबा प्रत्येक वर्ग में विभिन्न प्रकार मिलते हैं जो निम्न प्रकार हैं —

सोने का सिक्के प्रकार (Gold coins types)

Class I King at alter and deity —

इसके अग्रभाग पर राजा के अग्नीवेदी पर हवन करते अंकित किया गया है। वह शिर स्त्राण शिरोवेष्टन धारण किये हैं। उनके शरीर पर लम्बाई ईरानी कोट एवं पतलून है बायें हाथ में माला एवं कन्धों से अग्नि की लपटें निकलती ही है। मुद्रा में यूनानी लिपि में शावेसिलेअस बेसिलेओन कनिष्को" खुदा है। कुछ सिक्कों पर राजा के दाहिने हाथ में अंकुश बायें हाथ में माला एवं कमर से एक तलवार लटक रही है। उपाधि के आधार पर इस वर्ग के सिक्कों को दो उपवर्गों में विभक्त किया गया है।

(A) **बेसिलअस** — बेसिलेओन उपाधि के साथ

(B) शावनानोशाव उपाधि के साथ

(A) पृष्ठ चिन्ह के आधार पर इस उपवर्ग में सिक्कों को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है —

(1) सलेन प्रकार — (Salene type) यूनानी चन्द्र देवताओं की आकृति जो शिरोवेष्टन तथा लम्बे कपड़े

पहने हैं। कन्धे के पीछे चन्द्र, दाहिना हाथ आगे पहने हैं कन्धे की पीछे चन्द्र। दाहिना हाथ आगे की तरफ, बायें हाथ में राजकीय दंड धारण किये हैं एवं कमर से तलवार लटक रही है। यूनानी भाषा में देवता का नाम खुदा है।

(ii) मनाओवेगो प्रकार (Manasvago type) सिंहासन पर आसीन चार हाथ वाले चन्द्र देवता की आकृति, दो हाथों में राजदंड और Calliper पीछे को दोनों हाथों में पता नहीं क्या है एवं यूनानी अक्षरों में देवता का नाम।

(iii) माओ प्रकार — Mao type — चन्द्र देवता माओ की आकृति अंकित है।

(iv) हेफेस्टोस प्रकार - (Hephaistas type) दाढ़ीयुक्त देवता की खड़ी आकृति यूनानी अक्षरों में देवता का नाम अंकित है।

(B) जिन सिक्कों पर " श्रावनानो श्राव कनिष्को को शानो अंकित है उन्हें पृष्ठ चिह्न के आधार पर उन्हें ११ भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(i) अतसो प्रकार — Athsho type) सिरो वेस्टन तथा लम्बा कपड़ा पहने हुए दाढ़ी युक्त देवता की खड़ी आकृति है।

(ii) अर्दोक्षो प्रकार — Ardoksho type) प्रभामंडल में लम्बे कपड़े पहिने देवी की खड़ी आकृति।

(iii) लुहरस्प प्रकार — (Lahrasp type) दाढ़ी युक्त देवता की आकृति साथ में घोड़े का चित्र अंकित है।

(iv) बुद्ध प्रकार — (Budh type) बुद्ध की खड़ी आकृति

(v) माओ प्रकार — (Mao type) ईरानी चन्द्र देवता की आकृति

(vi) मिहिर प्रकार — (Mihir type) MEIPO: — इसमें देवता की खड़ी आकृति।

(vii) नाना प्रकार — देवी की खड़ी आकृति उनके सिर के ऊपर चन्द्रवना है। देवी का नाम NAVA SHAO अंकित है।

(viii) ओयशो प्रकार: (OESHO TYPE) देवता की खड़ी आकृति जिसके चार हाथ दिखलाये गये हैं जिनमें पात्र, बाजा त्रिशूल, बकरी धारण किये हुए है। देवता का नाम यूनानी भाषा में "ओ मशो" दिया हुआ है।

(ix) ओर्लेगिनो प्रकार :- (Orlagno type) राजा के समान वस्त्र पहने हुए देवता की खड़ी आकृति।

(x) फर्रो प्रकार :- Pharro type) इसमें भी लम्बी पोशाक पहने देवता की खड़ी आकृति है।

(xi) मज दो हावो (Maze do hano type) घोड़े पर सवार दो सिर वाले देवता की आकृति।

(2) Class II Bust of King and deity type—

अग्रभाग पर शिरस्त्राण एवं शिरो वेष्टन से युक्त राजा का अर्द्ध चित्र मेघ से निकलता मालूम पड़ता है। बाँया हाथ उपर को तरफ उठा है। जिसमें वह भाला पकड़े हुए है। यूनानी अक्षरों में ईरानी पदवी के साथ राजा का नाम राजा नानो शावो कनिष्क कोशानो है।

पृष्ठ भाग पर अंकित देव प्रतिमाओं के आधार पर दो भागों में बाँटा जा सकता है।

(1) अकशो प्रकार - यह Class I Arthso type) का सिक्का है।

(2) ओयशो प्रकार - भगवान शिव वर्णित आकृति के समान है।

Copper Coin types.

कनिष्क ने ताम्बे के सिक्के भी तैयार करवाये जो निम्न-लिखित प्रकार के हैं—

Class I King at altar and deity with the little Basileus Basileon"

अग्रभाग पर राजा की खड़ी आकृति जो अग्नि वेदी पर हवन कर रहा है वह नुकीली टोपी, लम्बा कोट और पतलून पहने हुए है। उसमें बाये हाथ में एक लम्बा भाला है। यूनानी लिपि में मुद्रा

लेख "वे सिलेअस वेसिलेयन आर्न" को"

इस प्रकार के अग्रभाग वाले सिक्कों को पृष्ठ चिह्न के आधार पर निम्नलिखित प्रकारों में बाँटा जा सकता है।

(1) हैलियोस प्रकार — Helios type) शिरोवेष्टन एवं लम्बे कपड़े धारण किये देवता की खड़ी आकृति उसके सिर के पीछे गोले से किरणें निकल रही है। देवता का दाहिना हाथ आगे की तरफ पड़ा हुआ है तथा बाँया कुल्हे पर है इसकी पहचान यूनानी सूर्य देवता से की जाती है।

कुछ सिक्कों पर देवता को तलवार के साथ दिखलाया गया है।

(2) ननाइया प्रकार (NANAIA TYPE) शिरोवेष्टन धारण किए देवी नाना की प्रभा मण्डल में खड़ी आकृति उसमें दाहिने हाथ में राजदण्ड है।

Class II King at altar and deity with the little Shano'

राजा को अग्रभाग पर class I के समान ही अंकित किया गया है। किन्तु यूनानी अक्षरों में मुद्रा लेख शान कनिष्की है। पृष्ठभाग को विभिन्न देवताओं के आधार पर निम्नलिखित प्रमाणों में बाँटा गया है —

(i) अयशो प्रकार — सोने के अयशो प्रकार सिक्कों के समान

(ii) बुद्ध प्रकार — बुद्ध की आकृति। यूनानी अक्षरों में SAKANANA BODDU अंकित है।

(iii) माओ प्रकार — सोने में माओ सिक्के की तरह मिथ्र
मिथ्र प्रकार — सूर्य देवता मिथ्र की खड़ी आकृति

(iv) नाना प्रकार — सोने के नाना प्रकार के समान ही

(v) वात प्रकार — vata types. देवता की दौड़ती हुई आकृति, बाल बिखरे, हुए तथा दोनों हाथ से कपड़े के कोने को पकड़े हुए है।

(vii) आयशो प्रकार — शिव की खड़ी आकृति कनिष्क के सिक्कों से पता चलता है कि उसने राजतंत्र का एक उन्नतशील विचार हमारे सामने प्रस्तुत किया। इसकी पुष्टि सिक्कों पर अंकित राजकीय पदवियों से होती है। राजा को हवन करते हुए दिखलाया गया है जो कि रोमन परम्परा की याद दिलाता है। ऐसा मालूम होता है कि कनिष्क को एक धर्मोदयद के रूप में यूनानी राजा राजकीय कार्यों के साथ धर्मोदयद का भी कार्य करते थे।

सिक्कों के पृष्ठ भाग पर यूनानी, ईरानी, ब्राह्मण एवं बौद्ध धर्म देवी देवताओं की आकृतियाँ अंकित हैं। कनिष्क ने विभिन्न प्रकार के सिक्कों पर भिन्न-भिन्न देवताओं को अंकित करवाया। अब प्रश्न उठता है कि अलग-अलग देवताओं के लिए अलग-अलग सिक्कों को बनवाने की आवश्यकता क्यों आ पड़ी। रैप्सन के अनुसार विभिन्न प्रकार के सिक्के विभिन्न प्रान्तों के लिए बनवाये गये जो कनिष्क के राज्य में सम्मिलित थे। उनके राज्य सीमा में विभिन्न धर्म के मानने वाले लोग रहते थे। कनिष्क का राज्य बहुत दूर तक फैला हुआ था। उसने विभिन्न केन्द्रों पर सिक्कों को बनवाया जिसका उस पर स्थानीय प्रभाव पड़ा। कैनेडी के अनुसार भारत और फारस की खाड़ी के बीच वाणिज्य और व्यापार में से नियम करते थे। अतः इसका प्रभाव कनिष्क के सिक्कों पर अवश्य पड़ा होगा। कषाण काल में काबुल और कश्मीर व्यापार का प्रधान केन्द्र था।

अब प्रश्न यह उठता है कि पृष्ठ भाग पर अंकित देवताओं की आकृति से कनिष्क के व्यक्तिगत धर्म पर कोई प्रकाश पड़ता है। आर्यधम के अनुसार कनिष्क के धार्मिक जीवन में कई मोड़ आये। शुरू में यूनानी देवता से अनुराग था। उसके बाद फारसी आग्नी एवं भारतीय प्रकृति पूजा के मिश्रित स्वरूप

अनुयायी हो गया। अंत में वह बौद्धधर्म को मानने वाला हो गया। तमाम सिक्कों पर राजा को हवन करते दिखलाया गया है। जिससे यह पता चलता है कि अन्तर्राष्ट्रीय समाज में कनिष्क के सिक्के प्रचलित थे एवं उनका अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं वाणिज्य में प्रमुख स्थान था। अतः कनिष्क ने सभी धर्मों से सहिष्णुता का भाव रखते हुए अपने सिक्कों पर देश के सभी महत्वपूर्ण देवी - देवताओं को स्थान दिया।

इसके पीछे आर्थिक कारण और राजनीतिक कारण था। कनिष्क ने सिर्फ यूनानी लिपिक ही प्रयोग किया खरोष्ठी का नहीं। पहले यूनानी लिपि से अधिक अनुराग था।

कनिष्क ने सोने के सिक्के इस बात को प्रमाणित करते हैं कि कनिष्ककाल आर्थिक रूप से सम्पन्न था। इस सोने के सिक्के से रोमन साम्राज्य के साथ सम्बन्ध का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता है। उनका तौल रोमन दिनेरियस औरियस के समान ही है। सोने का सिक्का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार एवं ताम्बे का सिक्का स्थानीय प्रयोग के लिए बनवाये गये होंगे।

The end.

Scanned with CamScanner